Journal Homepage: - www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

Article DOI: 10.21474/IJAR01/19380
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/19380

RESEARCH ARTICLE

" उर्फ सैम " कहानी में जड़ों के टूटने से लेकर जुड़ने तक की प्रासंगिकता का बोध

SENSE OF RELEVANCE FROM BREAKING OF ROOTS TO JOINING IN THE STORY AKA SAM

Prof. Dr. P.M Bhumre
Head of Department, Hindi Department, S.M. B. P.K Mahavidyalaya, Shankarnagar Tehsil- Biloli, Dist.- Nanded.

Manuscript Info

Manuscript History
Received: 25 June 2024
Final Accepted: 27 July 2024
Published: August 2024

Key words:-
Discussion, Disappointment in Marital Life, Loneliness, Mechanical Civilization, Family Bonds, Western Civilization, Jealousy Towards India, Disillusionment With Modernity, But Cultural Conduct, Tendency to Look Down on Others, Mental Turmoil, Disintegration In Society

Abstract

The stories of the 1980s, based on the ground of narrative and sensitivity, expressed feelings of disappointment towards old ideas, traditional gender relations, respect and faith. Based on the same thoughts and feelings, the story 'Aka Sam', written in 1982, has also been successful in expressing the disappointment of marital life, loneliness and the conflict between two generations. The story of being disappointed by the disillusionment of modernity and connecting with one's roots has been expressed through a hero named Sawan Pratap Singh, which is relevant even today.

Copyright, IJAR, 2024,. All rights reserved.

प्रस्तावना:-

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सामाजिक स्तर पर तीव्र गति से बदलाव होते रहे हैं क्योंकि पंचवर्षीय योजनाओं के और विभिन्न सरकारों द्वारा किए गए लोक कल्याणकारी योजनाओं के परिणाम से व्यक्ति के आर्थिक विकास में उन्नति हो गई है। बढ़ती शिक्षा के साधनों से राष्ट्रीय और सामाजिक स्तर पर मनुष्य के जीवन में बदलाव आए हैं जबकि आर्थिक उन्नति से लोगों में विदेश के प्रति आकर्षण निर्माण हुआ है। यह आकर्षण शिक्षा, संस्कृति एवं रहन-सहन और भाषा को अपनाने के प्रति भी रहा है । विदेशों में पढ़े-लिखे भारतीयों को अपनी संस्कृति ,मूल्य एवं विचार-विमर्श कुंठित लगने लगे रहे हैं। परंतु विदेश में रहकर तथा विदेशी संस्कृति के अनुकरण से भी वे पूरी तरह अन्य संस्कृति में स्वयं को बौना ही महसूस करने लगे हैं । परिणामस्वरूप विदेशी संस्कृति का गुणगान गाने वाले मजबूर होकर भारतीय संस्कृति का महत्व समझने लगे हैं। विदेशी सभ्यता की नकल करने वाले सावन प्रताप सिंह को अपनी समस्याओं से निजात पाने के लिए मातृभूमि में ही वापस लौटना पड़ता है। इसी प्रकार का भाव स्वातंत्र्योत्तर कहानियों में अभिव्यक्त होता रहा है ।

उर्फ सैम कथा संग्रह की 'उर्फ सैम' नामक कहानी वैवाहिक जीवन, एकाकीपन और दो पिढ़ीयों के आपसी संबंध का रहस्योदघाटन करने वाली कहानी है। इस कहानी का परिवेश तथा कथावस्तु आज भी प्रासंगिक है । क्योंकि इस कहानी का रचना समय 1982 का है फिर भी इतने वर्षों के बाद भी इस कहानी के पात्रों, प्रसंगों और भाषा वर्तमान परिवेश के साथ तर्कसंगत है । उर्फ सैम नामक कहानी का प्रमुख पात्र सावन प्रताप सिंह है जो कई वर्षों से शिक्षा अर्जित करने हेतु अमेरिका में जाकर बसा है । शिक्षा प्राप्त होते ही स्वदेश लौटने हेतु उसमें संकोच भाव उत्पन्न होता है। विदेशी संस्कृति रहन-सहन एवं भाषा का प्रभाव सावन प्रताप सिंह पर होता है। वे इतना विदेशी संस्कृति में घुल- मिल जाता है कि , अपनी संस्कृति उसे गौण लगती है। सावन प्रताप सिंह की यह वृत्ति स्वयं के मातृभूमि के प्रति संकीर्ण वृत्ती का परिचय कराती है । सावन प्रताप सिंह जिस मोह,

Corresponding Author:- Prof. Dr. PM Bhumre

आकर्षण से प्रेरित होकर अमेरिका जाते है वहां बस जाने के बाद कोशिश करते है कि,एक अच्छा सा जीवन जिया जाए । परंतु उस संस्कृति में पूरी तरह से घुलमिल जाने के बाद भी पूरी तरह से सम्मिलित नहीं हो पाते । भिन्न-भिन्न प्रसंगो के अनुसार कहानी में आयाम उद्घाटित होते है। भारतीय होकर भी भारतीयों के प्रति ईर्ष्या करना इस कहानी के पात्रों की विशेषता रही है। उर्फ सैम कहानी का नायक सावन प्रताप सिंह है जिसकी मानसिकता विदेश के प्रति प्रेम की है जबकि उनका जन्म और परिवेश पालन- पोषण भारतीय परंपराओं एवं संस्कारों में हुआ है । संयोग से सावन प्रताप सिंह को अमेरिका जाकर पढ़ाई करने का अवसर मिलता है । जैसे ही वह अमेरिका के परिवेश में कुछ वर्ष बीताते हैं और वहीं पर नौकरी करते है । जब भी उस पर मुसीबत आती है तब - तब तक उन्हें हिंदुस्तान की याद आती है । वहां पर मशीनी सभ्यता में पले, बढ़े एवं रहने के परिणाम से उन पर भी अमेरिकन सभ्यता हावी हो जाती है । परिणामस्वरुप सावन प्रताप एक भारतीय होकर भी भारत के प्रति ईर्ष्या और लोगों के प्रति द्वेष भाव रखता है । भारतीय लोगों की गरीबी और सभ्यता पर उसे घीन आती है। भारतीय लोगों की कलाकारी पर उसे बौनापन महसूस होता है । सावन प्रताप सिंह कहते हैं कि, "चिल्लाकर कहे कमबख्तो, कमअक्लो, इससे कहीं बेहतर सामान अमेरिका में मिलता है"। 1 अमेरिकन संस्कृती में ना कोई बंधन होते हैं ना कोई मर्यादाएं । ऐसी स्थिति में उसे एक अच्छी पढ़ी-लिखी पत्नी चाहिए जो हिंदुस्तान में विवाह की तलाश में आता है। किसी दूर के रिश्ते में आशारानी के साथ सावन प्रताप का विवाह हो जाता है । आशारानी के साथ विदेश में जाकर बस जाता है और पत्नी के नाम में भी 'ऐश' के रूप में बदलाव करता है । अपने देश में रखे नाम और पहचान विदेशी परिवेश में उसे बौना लगती है। अमेरिकन सभ्यता में खुद को एक श्रेष्ठ कहलाने की झूठी कोशिश उसके द्वारा होती रहती है। जब कुछ दिनों के लिए भारत में छुट्टियां बिताने और शादी करने हेतु आते है तो उनकी मानसिक क्षुद्र वृत्ति का प्रदर्शन होता है ।

पर यानी की अन्य संस्कृति के प्रति उसका मोह छुपा नहीं है अर्थात पर संस्कृति का आचरण स्वीकार करने में उसे स्वाभिमान लगता है। अपना देश छोड़कर सावन प्रताप सिंह जब से अमेरिका जाकर बसे है परंतु वापस अपनी मिट्टी वतन में बसने के लिए अंत में आ जाते हैं । परंतु उन्हें कटु प्रसंग को झेलना पड़ता है । विदेशी संस्कृति और परिवेश में घुलमिल जाना शुरूवात में उन्हें अपमान का लगता है । वह अमेरिका जाते ही अमेरिकी चीजों के प्रति उसके प्रेम में वृद्धि हुई है। "दरअसल उसे एयर इंडिया से कोई रुहानी लगाव नहीं है ,जैसा जापानियों को जाल से होता है"।2 अमेरिका से कुछ दिनों की छुट्टियां मनाने के लिए सावन प्रताप सिंह भारत आते हैं जबकि दूसरों की प्रगति देखकर उसे चिढ़ निर्माण होती है साथ ही अपने नाते रिश्तेदारों में अपनी दूम हिलाते रहना उसकी एक प्रवृत्ति दिखाई देती है । अमेरिका के वस्तुओं के प्रति उसका इतना प्रेम बढ़ जाता है कि, कई चीजे इकट्ठा करके अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को दिखाना चाहता है । अपनी झूठी प्रशंसा करने के लिए बातें करते रहता है परंतु अपने नए देश के खिलाफ चुप्पी साथ लेता है। जबकि अपने मातृभूमि के प्रति कई बार अपमानजनक टिप्पणियां करने में भी संकोच नहीं करता है । अपने देशवासियों को पिछड़ा और अप्रगत और असंस्कृत कहकर डंका पिटता रहता है।

संस्कार हीनभाव की वृत्ति भी उनमें व्याप्त है। जैसे सावन प्रताप सिंह की परवरिश एक संस्कारी परिवार में हुई है । परंतु सावन प्रताप सिंह पर विदेशी संस्कृति का नशा इतना चढ़ जाता है कि,अपने सांस्कृतिक बंधनो को भूल जाता है। हिंदुस्तानी स्त्री विदेशी संस्कृति का गुणगान तो गाती है पर अपनी संस्कृति उसे विदेश में बौना लगती है। इसलिए अपने वेश और पोशाक का त्याग करते हुए पाश्चात्य संस्कृति में सभ्य बनने की कोशिश उसके द्वारा हो जाती है। जैसे,"पर साथ ही पेजबॉय स्टाइल में बाल कटवा दिए थे ,जींस- पैंट का पहनावा अख्तियार कर लिया था"। 3 भारतीय संस्कृति उदारवृत्ति के लिए विश्व में प्रसिद्ध रही है । जबकि सावन कुमार के आचरण एवं विचारों से हमेशा दूसरों को नीचे दिखाने की प्रवृत्ति प्रदर्शित होती रहती है जिसके कारण भारतीय संस्कृति की उदारता एवं आदर्शों को ठेस पहुंचाई जाती है। सावन प्रताप सिंह विदेशियों की तरह भारतीयों को गाली - गलौज करते रहते हैं । भारत की आध्यात्मिक संस्कृति का गौरव विश्वविख्यात रहा है परंतु सावन प्रताप सिंह को देश के प्रति लगाव नहीं है । हिंदुस्तान की हर एक वस्तु, समृद्धि के जो प्रतिक है उसके प्रति क्षुद्र मनोव्यथा का दर्शन वह कराता रहता है । हालांकि भारतीय स्त्री- पुरुष विवाह को एक संस्कार मानते हैं और इसे जी जान से निभाने की कोशिश भी करते हैं। पति की आज्ञा का पालन करना और अपने परिवार के पालन-पोषण में ध्यान देना एक अच्छे पत्नी की पहचान होती है। साथ ही घर गृहस्थी ठीक-ठाक से चलाना पति-पत्नी का दायित्व होता है। परंतु सावन प्रताप सिंह विवाह पूर्व के लैंगिक संबंधों को वर्जित नहीं मानते। पश्चिमी सभ्यता में इतने घुलमिल जाते हैं कि, वे अपने संस्कृति की मान मर्यादा भूल जाते हैं। "कितनी स्त्रियों के साथ वह डेट्स पर जा चुका है। दिल नहीं तो जेब खोलकर ,उनके खाने-पीने और मनोरंजन पर खर्च किया है"।4 सावन प्रताप सिंह विदेश में जाकर अपने को सभ्य और अमेरिकन संस्कृति का हिस्सा बनने हेतु बदलाव करते है। जैसे इस कहानी की स्त्री पात्र आशारानी है जो ऐश के रूप में नाम परिवर्तन करके सभ्य समाज की स्त्री बनना चाहती है। इतना ही नहीं वह अपने रीति रिवाजो को ठुकरा कर बाह्य रूप से आकर्षक बनना चाहती है। परिणाम स्वरुप अपने बाल कटवाकर पेजशश बॉय की तरह दिखाने की कोशिश में लगी रहती है । साथ ही जींस पैंट का पोषाक अपना कर स्वयं को फिट दिखाना चाहती है। परंतु ऐश के पति द्वारा थोड़ा सा भी सम्मान उसे नहीं मिलता। जब से बच्चों के नाम भी अमेरिकन परिवेश के अनुसार रखे जाते हैं तब से बच्चों के प्रति मां के प्रेम में अछूतापन आता रहा है । भारतीय संस्कृति और मान्यताओं को तहस-नहस करती हुई अपने को श्रेष्ठ दिखाना चाहती है।

जैसे ,"काश, यह कुछ पहले हुआ होता ! अर्जुन कविता भी मां का दूध पी लेते। ऐश बेचारी को दूध सुखाने के लिए क्या कम तकलीफे झेलनी पड़ी"।5 कहानी के पति-पत्नी अपने बच्चों की परवरिश विदेशी संस्कृति को ध्यान में रखते हुए करते हैं । इसलिए बच्चों में विदेशी संस्कृति के मूल्य संवर्धन में वृद्धि होती है। भारतीय बच्चे बड़े ही नसीबवान होते हैं क्योंकि उनका बचपन माता-पिता के साथ तो बीतता ही है परंतु उन्हें सौभाग्य से दादा और दादियों की भी संगत करने का अवसर मिलता है । यह केवल संयुक्त कुटुंब पद्धती में ही संभव होता है। परंतु जिस आर्ची और केटी का जन्म जिस परिवेश में हुआ है।उस परिवेश में माता-पिता बच्चो की तरफ ध्यान देने में असमर्थ रहते हैं ।"उन लोगों को पता भी नहीं चलता था कि,आर्ची अपने अलग कमरे में रात में कितनी देर सुलाया और कितनी देर रोया"।6 माता-पिता अपने बच्चों की तरफ ध्यान देने की बजाय अपनी तंदुरुस्ती पर ध्यान देते हैं । उन्हें बच्चों की चिंता से ज्यादा अपने सेहत की चिंता होती है । बच्चों के जन्म के बाद स्त्रियों का वजन बढ़ जाता है परिणाम स्वरुप वजन न बढ़े इसलिए आहार की तरफ ध्यान देकर शरीर फिट रखने की कोशिश होती रहती है। इस कहानी की प्रमुख स्त्री पात्र आशारानी जो ऐश बन गई है वह अपने बच्चों को स्वतंत्र कमरे में सोया करती है । साथ ही बचपन में उन्हें भूख लगने पर बोतल से दूध पिलाती रही हैं जिसके कारण बचपन से ही बच्चों में परिवार एवं माता-पिता के प्रति जो स्नेह भाव होना चाहिए वह बच्चों में भावना नहीं बन पाती। बच्चों में अकेलापन और बौध्दिक न्युनता पनपती है उनमें से यह भी एक कारण रहा है। बल्कि हिंदुस्तान में इस के विपरीत भरा पूरा परिवार एक साथ रहता है जिससे बच्चों पर संस्कारों का संवर्धन करने में वृद्धों की संगत मिलती है। विदेशी संस्कृति के प्रभाव से संवेदनशील विषयों तथा दुख की घटनाओं पर भी ऐयाशी करना क्षुद्र प्रदर्शन की वृत्ति का वर्णन कहानी के पात्रों के माध्यम से हुआ है। प्रस्तुत कहानी के पात्र एक दूसरे से भावना के स्तर पर कटे हुए हैं। जिसमें किसी भी प्रकार के विचारों का आदान-प्रदान नहीं होता है।वे बच्चे पति एवं पत्नी सभी प्रकार से स्वतंत्र विचारों को प्रमुखता देने वाले होते हैं। परिणामस्वरुप भावनिक एकात्मता उनमें नहीं बन पाती है। एक दूसरे के सुख या दुख में सहभागी होने में वे कतराते हैं। जो महत्त्व हीन होता है वही जो चीज बेजान लगती है। उस चीज के प्रति विदेशी परिवेश की मनोवृत्ति निम्न स्तर होती है । जैसे, कहानी के पात्र एक प्रसंग पर गली, मोहल्ले में किसी के मरने पर भी खुशी मनाते हैं । शवयात्रा निकालने पर भी पेट भर खाना खाते - पीते रहते हैं। ऐसी ऐयाशी, असंवेदनशील परिवेशमें वृद्धों की तरफ कोईध्यान नही देता । "पता है ओल्ड होम का सबसे बड़ा त्यौहार क्या है ? शवयात्रा! छलकर खाते- पीते हैं उस दिन लोग"।7 कहानी में जो पुरुष सावन प्रताप सिंह है उन्हें पाश्चात्य सभ्यता की उपर्युक्त हरकत देखकर डर लगता है। बूढ़े लोगों के साथ किसी भी प्रकार की सम्मानजनक भावना विदेशी संस्कृति में नहीं दिखाई देती है । परिणामस्वरुप कहानी का नायक अपनी मृत्यु को देखकर भयभीत हो जाता है । पति-पत्नी और बच्चों के पारिवारिक रिश्तों में क्षुद्र वृत्ति प्रदर्शित होती रही हैं। साथ ही मां का बच्चों के प्रति वात्सल्य का अभाव प्रस्तुत कहानी में प्रदर्शित होता है। पति-पत्नी का रिश्ता अटूट होता है । इस नाते में एक विश्वास होता है । यह विश्वास की भावना जब तक ही है तब तक पति-पत्नी का रिश्ता निभाते रहता है। परंतु इस कहानी में पति-पत्नी के रिश्ते में किसी भी प्रकार का अपनापन नहीं है । भले ही एक दूसरे को जो दिखाया जा रहा है वह नकली प्रेम है । क्योंकि सावन प्रताप सिंह कहानी के नायक है जिनका विवाह हो आशारानी के साथ हुआ है। एक दूसरे के पवित्र बंधन को निभाने की जिम्मेदारी दोनों पर है परंतु इस पवित्र रिश्ते को कहानी के नायक द्वारा ही तोड़ा गया है। दोनों भी पति-पत्नी के रिश्ते में होकर बाह्य लैंगिक संबंध स्थापित करते हैं।"आधुनिकता के नाम पर आज विश्व में फैशनपरस्ती ,सेक्स की उन्मुक्तता , मादक पदार्थों का सेवन, येलो और ब्लू लिटरेचर के प्रचार - प्रसार के परिणाम स्वरुप युवा पीढ़ि मूल्यों को तोड़ने में संलग्न है"।8 जैसा की कहानी में उल्लेख हुआ है कि, सावन प्रताप सिंह जिस हिंदुस्तानी लड़की को बीवी बनाकर लाए थे तब तक वह हिंदुस्तानी लड़की एक बच्चे की मां बन चुकी थी अर्थात विदेशी संस्कृति के परिणाम से विवाह पूर्व लैंगिक संबंध बनाने की दुष्ट प्रवृत्ति भारतीयों में भी बन रही है। विवाह के पहले आशारानी उर्फ ऐश एक बच्चे की मां बन चुकी थी। जैसे , "हिंदुस्तानी लड़की को बीवी बनाकर लाए पर तब तक वह हिंदुस्तानी लड़की एक बच्चे की मां बन चुकी थी"। 9 इसके साथ ही एक पुरुष विवाहित होकर भी कई स्त्रियों के साथ लैंगिक संबंध बना चुका है जो बीभत्स मनोवृत्ति का प्रदर्शन कराता है । आज स्त्री - पुरुषों में प्रकृति अनुरूप सबंध नहीं रहे हैं, उसमें कृत्रिमता और संवेदनशून्यता आने से पारिवारिक भावनाओं की तादात्म्य वृत्ति न होने से संतोष का कारण बन रहा है। जैसे, "पुरुष ही नहीं महिलाये भी अप्राकृतिक साधनों से यौन संतुष्टि प्राप्त करके प्रकृति को चुनौती दे रही है ,जबकि प्रकृति को चुनौती देना बडा ही जोखिम का कार्य है जो उन्हें दम्पती सुख से वंचित रखने का कारण भी बन रहा है"। 10 ऐसी वीभत्स संस्कृति में बच्चों के प्रति जो माता-पिता का दायित्व होता है उसे भी ठीक-ठाक से निभाया नहीं जाता है। जिस कारण बच्चों में भी अश्लीलता और अलगाव की वृत्ति में वृद्धि होने देर नहीं लगती। इस कहानी के पति- पत्नी द्वारा व्यभिचार में लिप्त होने के कारण इसका खुलकर समर्थन करना भी हास्यास्पद लगता है तो बच्चों की परवरिश पर भी इसके दुष्परिणाम होते रहते हैं।

सारांश -

उर्फ सैम नामक कहानी का नायक अपने वतन से दूर जाकर अमेरिका की विदेशी संस्कृति में रौब जमाना चाहता है परंतु उसकी यही मंशा उसे अंदर ही अंदर खोखला बनाती है । भारतीय संस्कृति के आदर्श और मूल्यों की परंपराओं को त्यागने के दुष्परिणाम उसे जड़ों से जुड़ने के लिए असहाय बनाते हैं जो अपने गुणों पर तटस्थ न रहते हुए दिखावा और ढोंग करते हैं। साथ ही आत्मसम्मान के साथ समझौता करने के दुष्परिणामों को झेलते हुए भी विदेशी संस्कृति का डंका पीटते है, उनके जीवन में

निराशा ही आती हैं। यह सत्य है कि, अपनी संस्कृति ,परिवेश ही मनुष्य को संकट के समय सहायता करती है। चाहे कितनी भी परवरिश विदेशी उपभोग की संस्कृति में होती रहे । इसी प्रकार की वर्तमान युगीन विसंगतियों के दुष्परिणामों के दंश को झेलता सावन प्रताप सिंह का परिवार अंत में अपने देश, समाज से जुड़ना चाहता है । कहानी के पात्रों ने भरपूर कोशिश की है कि, विदेशी सभ्यता, बोलचाल व्यवहार और वेशभूषा से सभ्य बना जा सकता है उनकी यह धारणा झुठी सिद्ध हुई हैं। विदेशी संस्कृति में आचार एवं विचारों में स्वतंत्रता है परंतु उसके दुष्परिणाम भी सामाजिक व्यवस्था पर हो रहे हैं। जड़ों से कटना कितना दर्द देता है और जड़ों से जुड़ने पर ही आत्मिक एवं मानसिक समाधान मिलता है। इसका जिक्र प्रस्तुत कहानी में हुआ है।

संदर्भ सूची -

1. प्रतिनिधि कहानियां - मृदुला गर्ग पृष्ठ- 79 किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली - 2017
2. प्रतिनिधि कहानियां - मृदुला गर्ग पृष्ठ- 80 किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली - 2017
3. प्रतिनिधि कहानियां - मृदुला गर्ग पृष्ठ- 80 किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली - 2017
4. प्रतिनिधि कहानियां - मृदुला गर्ग पृष्ठ- 79 किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली - 2017
5. प्रतिनिधि कहानियां - मृदुला गर्ग पृष्ठ- 79 किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली - 2017
6. प्रतिनिधि कहानियां - मृदुला गर्ग पृष्ठ- 79 किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली - 2017
7. प्रतिनिधि कहानियां - मृदुला गर्ग पृष्ठ- 79 किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली - 2017
8. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में अलगाव की अवधारणा डॉ. बिंदु दुबे पृष्ठ – 39 - 2018
9. प्रतिनिधि कहानियां - मृदुला गर्ग पृष्ठ- 79 किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली - 2017
10. सामाजिक संदर्भों के नए प्रतिमान डॉ. किरण श्रीवास्तव पृष्ठ - 13 अमन प्रकाशन दिल्ली – 2009 |